PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Hindi

Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

अयोध्याकांड का पारिवारिक आदर्श

• अर्चना निधि • रागिनी • नम्रता मित्रा
• शरण सहेली

Received : November 2013
Accepted : March 2014
Corresponding Author : Sharan Saheli

Abstract : हिन्दी ही नहीं विश्व साहित्य के सर्वकालीन महानतम साहित्यकारों में अग्रगण्य गोस्वामी तुलसीदास की रचनाएँ साहित्य की धरोहर हैं। यद्यपि इस जनकवि को अनेक उपाधियों से विभूषित किया गया, परंतु आज भी उनकी लोकप्रियता जनमानस के कवि-तुलसी के रूप में है। घर, परिवार और समकालीन समाज से प्रताड़ित होते रहने के बावजूद वो निरंतर पारिवारिक आदर्शों तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयासरत रहे। 'रामचरित मानस' और विशेषतः 'अयोध्याकांड' के माध्यम से उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक और पारिवारिक आदर्शों की स्थापना की।

अर्चना निधि
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2011–2014), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

रागिनी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2011–2014), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

नम्रता मित्रा
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2011–2014), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

शरण सहेली
एसोसिएट प्रोफेसर-सह-अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : sharansaheli@gmail.com

प्रश्नावली द्वारा छात्राओं, संभ्रांतजनों एवं श्रमिक वर्गों के विचार जानने का प्रयास किया गया। सामान्य रूप से यह जानने का प्रयास किया गया कि तुलसीकृत रामचरितमानस के अयोध्याकांड का पारिवारिक आदर्श क्या आज भी प्रासंगिक है?विशेष रूप से यह भी जानने का प्रयास किया कि क्या यह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श स्थापित करने में सक्षम है?

संकेत शब्दः- कालजयी, अग्रगण्य, प्रासंगिकता, पारिवारिक मूल्य, विश्व-बंधुत्व

भूमिका :

हिन्दी ही नहीं विश्व के सर्वकालीन महान कवियों में अग्रगण्य गोस्वामी तुलसीदास जी भक्ति के क्षेत्र में जितने महान थे, उतने ही कविता के क्षेत्र में भी। रामचरित्र की व्यापकता में उन्हें अपनी कला के संपूर्ण कौशल के विस्तार का सुयोग प्राप्त हुआ – ''सर्वकवि की दृष्टि जितनी व्यापक और सर्वग्राही होनी चाहिए, वैसी ही दृष्टि उनकी थी। समाज के विकृत स्वरुप पर दृष्टि देकर उन्होंने उसके उद्धार का उपाय भी सोचा। उनकी यह प्रतीती थी कि राम के बिना समाज का कल्याण नहीं हो सकता। राम के इसी स्वरूप को जन-जन में पहुँचाने का बीड़ा उन्होंने उठाया और अपने प्रयत्न में उन्हें सफलता मिली। ऐसी सफलता जैसी और हिन्दी कवि को नहीं मिली।'' (सिंह 1976, 41)

तुलसीदास जी ने अपने महानतम ग्रंथ 'रामचरितमानस' में भगवान विष्णु के मानवावतार मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम की कथा कही है, जो राष्ट्रीय एकता और विभिन्न मतों के समन्वय का अद्वितीय उदाहरण है- ''श्री रामचरितमानस प्रारंभ से अंत तक साहित्य और समाज तथा ज्ञान और भक्ति का समन्वय ग्रंथ है, इतना नि:संदिग्ध है।'' (सिंह 2002, 65)

सातकांडों में वर्णित मानस का द्वितीय कांड अयोध्याकांड समस्त रामचरितमानस का केन्द्रबिंदु है। इसे रामचरितमानस का हृदय स्थल कहा गया है। इसके अंतर्गत वर्णित चित्रकूट की सभा एक ऐसी असाधारण एवं अति विशिष्ट घटना है, जिसके आधार पर मानवता, व्यवहार कुशलता, स्नेह-शील, नीति, त्याग आदि का सुंदरतम रूप मानव-जीवन के सम्मुख प्रकट हुआ है।

वर्तमान युग सामाजिक विद्रूपताओं का युग है। भौतिक सुखों के पीछे भागता मनुष्य नैतिक मूल्यों और आदर्शों को दर किनार कर सिर्फ अपना सुख चाहता है। उसकी दृष्टि में घर-परिवार, समाज या राष्ट्र कोई अहमियत नहीं रखते।

इन्हीं विसंगतियों और विडंबनाओं से मुक्ति दिलाने में अयोध्याकांड विशेष रूप से प्रासंगिक है। वैसे भी - ''प्रासंगिकता - अप्रासंगिकता का संबंध किसी युग विशेष की प्रगतिशील चेतना के साथ जुड़ा हुआ होता है, उस चेतना के साथ जो सामाजिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करती है या उसे सही दिशा प्रदान करती है।'' (राय, 1993, 37)

गोस्वामी जी ने रामचरितमानस को एक युगांतकारी रूप प्रदान किया है। इसके माध्यम से उन्होंने जो पारिवारिक आदर्श हमारे समक्ष रखा है, वह भ्रम के धुंध को परे हटाकर आज भी हमारा मार्ग दर्शन करता है।

तुलसी के काव्य में जीवन मूल्यों एवं मानव मूल्यों का समन्वय है और यह मूल्य निरूपण भारतीय संस्कृति के उदात्त मूल्यों एवं नैतिकता के आदर्शों में अनुप्राणित है। कर्तव्य परायणता, शिष्टाचार, सदाचरण, कर्मण्यता, निष्कपटता, कृतज्ञता, सच्चाई, न्यायप्रियता, उत्सर्ग की भावना, क्षमा आदि जीवन मूल्यों का निरूपण अत्यंत सुंदर और सहज ढंग से 'रामचरितमानस' में किया गया है।

'मानस' केवल श्रीराम एवं भरत का आदर्श भ्रातृत्व ही नहीं दर्शाता बल्कि विश्व बधुत्व का मार्ग भी दिखलाता है- ''रामचरितमानस के सौंदर्य द्वारा तुलसीदास ने जनता को लोकधर्म की ओर जो फिर से आकर्षित किया, वह निष्फल नहीं हुआ। वैरागियों का सुधार चाहे उससे उतना न हुआ पर परोक्ष रूप से साधारण गृहस्थ जनता की प्रवृत्ति का बहुत कुछ संस्कार हुआ।'' (सिंह, 1976, 169)

अपने प्रोजेक्ट द्वारा हमने रामचरितमानस में उल्लिखित उन्हीं जीवन मूल्यों की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता को आज के संदर्भ में जानने का प्रयास किया है। 'रामचरितमानस', शाश्वत जीवन मूल्यों का आकाशदीप है। प्रत्येक संस्कृति के कुछ ऐसे शाश्वत नियम, उपनियम एवं परंपराएँ होती हैं, जो इसकी आधारशिला होती है। जो साहित्यकार साहित्य में मूल्यों के निरुपण का दृष्टिकोण रखेगा, वह सत्यम, शिवम्, सुंदरम् के आदर्श को अपनी रचनाओं में आवश्यक तत्व मानेगा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने साहित्य में मूल्यों का समर्थन करते हुए कहा है कि 'मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ।'' तुलसी का साहित्यिक दृष्टिकोण कलापक्षी नहीं, जीवन लक्षी था।

राज्य बनता है - व्यक्तियों से, परिवारों से और समाजों से। रामराज्य अथवा कल्याणकारी राज्य तभी संभव होता है, जब पारिवारिक जीवन शुद्ध और मर्यादायुक्त हो। पिता-पुत्र, पति-पत्नी, सास-बहू इत्यादि का पारस्परिक संबंध एवं व्यवहार यदि मर्यादापूर्ण एवं विवेक युक्त होगा तो सामाजिक जीवन स्वस्थ रहेगा। भाई-भाई के बीच स्नेह, विश्वास और प्रेम होना चाहिए। राम भरत से कहते हैं -

गुरु पितु-मातु स्वामि सिख पालें
चलेहुँ कुमग पग परहिं न खालें
अस विचारि सब सोच विहाई,
पालहु अवध अवधि भरि जाई।।

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान क्या है यह तो बता सकता है, किंतु क्या होना चाहिए और क्यों होना चाहिए?इस प्रकार के प्रश्नों के समाधान नहीं बता सकता। मानवजीवन के मूल्यों का विचार न कभी विज्ञान ने किया है न करेगा। विज्ञान ज्ञेय वस्तु तक ही सीमित है। त्याग के

स्थान पर 'परिग्रह' का महत्व यत्र-तत्र सर्वत्र दृष्टिगत होता है। इसका मूल कारण है अपने साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की विस्मृति अर्थात् मानवजीवन के शाश्वत मूल्यों की उपेक्षा।

आदर्श साहित्य व्यक्ति को वास्तविक युग बोध प्रदान करने के साथ-साथ सामाजिक दायित्व का ज्ञान और पूर्ण करने की क्षमता प्रदान करता है। मानस के अंतर्गत अयोध्याकांड के माध्यम से तुलसीदासजी ने अनेक नैतिक पारिवारिक मूल्यों की स्थापना की है। इन्होंने अयोध्याकांड के अंतर्गत पारिवारिक संबंधों के बीच समन्वय स्थापित करके एक आदर्श परिवार की उद्‌भावना की है। जिसके आदर्श आज भी अनुकरणीय है।

उदाहरण स्वरूप :-

- **पिता-पुत्र का संबंध** - पिता द्वारा वन-गमन की आज्ञा शिरोधार्य कर राम माता कौशल्या से वन जाने हेतु विदा लेने जाते हैं । वे कहते हैं कि मैं चौदह वर्ष वन में रहकर और पिताजी के वचनों को सत्यकर फिर आपके चरणों के दर्शन करूँगा-

  बरस चारि दस विपिन बसि, करि पितु वचन प्रमान।
  आइ पाय पुनि देखिहऊँ मनु, जनि करसि मलान ।।

  (पृष्ठ सं०-45, पद-53)

- **कौशल्या का राम के प्रति स्नेह** - कौशल्या राम वन-गमन की बात सुनकर व्याकुल हो जाती हैं। वे धर्म संकट में पड़कर राम को न रोक सकती है और न कह सकती है कि वन जाओ-

  जौं केवल पितु आयसुंताता । तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता।।
  जौं पितु मातु कहेउ वन जाना। तौ कानन सत अवध समाना।।

  (पृष्ठ सं०-47, पद-56)

- **भरत का भ्रातृ प्रेम** - चित्रकूट की सभा में भरत आत्म ग्लानि व्यक्त करते हुए श्री राम से अयोध्या लौटने की विनती करते हुए कहते हैं कि मेरी एक विनती सुनकर आप जैसा उचित समझें, वैसा ही कीजिए -

  देव एक विनती सुनि मोरी । उचित होई तस करब बहोरी।।
  तिलक समाजु साजि सबु आना । करिअ सुफल प्रभु जैं मनुमाना ।।
  सानुज पठइअ मोहि वन, कीजिअ सबहिं सनाथ ।
  तनरू फेरिअहिं बंधु दोउ, नाथ चलौं मैं साथ ।।

  (पृष्ठ सं०-214, पद-268)

- **सीता का आदर्श भारतीय नारी स्वरूप** - सीताजी जब श्रीराम के साथ वन जाने का आग्रह करती हैं तो वन के कष्ट बताकर प्रभु उन्हें घर पर रखना चाहते हैं । वे वन के कष्टों की उपेक्षा कर साथ चलने का आग्रह करती हैं -

  मैं सुकुमारि नाथ बन जोगु । तुम्हहिं उचित तप मो कहु भोगू।।

  (पृष्ठ सं०-57, पद-67)

- **अयोध्यावासियों का राम के प्रति स्नेह**- राम अयोध्यावासियों को सोता छोड़कर लक्ष्मण तथा सीता के साथ वन के लिए प्रस्थान करते हैं। अयोध्यावासी व्याकुल होकर अनेक ढंग से प्रलाप करते हैं । जैसे चकवा-चकवी और कमल सूर्य के बिना दु:खी होते हैं, उसी प्रकार वे दु:खी हैं-

  राम दरस हित नेम ब्रत, लगे करन नर नारि ।
  मनहुँ कोक कोकी कमल, दीन बिहीन तमारि ।।

  (पृष्ठ सं०-71, पद-86)

- **पिता की पुत्री के प्रति गौरव-भावना** - सीताजी को तपस्विनी वेष में देखकर राजा जनक का हृदय वात्सल्य प्रेम से उमड़ पड़ता है। उन्हें गर्व होता है कि उनकी पुत्री ने दोनों कुलों को पवित्र कर दिया-

  तापस वेष जनक सिय देखी। भयउ प्रेम परितोषु विसेषी।।
  पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ । सुजस धवल जगु कह सबु कोऊ।।

  (पृष्ठ सं०-231, पद-287)

आज के भौतिकवादी युग में जहाँ रिश्तों की धज्जियाँ उड़ रही हैं, पारिवारिक आदर्श बिखर रहे हैं जैसे- माता-पिता का अनादर, भाई-भाई की शत्रुता, पवित्र रिश्तों की मर्यादा का उल्लंघन हो रहा है। ऐसे घोर कलियुग में मानस के नैतिक पारिवारिक मूल्य ही हमारा मार्गदर्शन करते है। जैसा कि लक्ष्मी, सिंह कहते हैं - ''मानस में सुदीर्घ भारतीय परंपरा के वैविध्य का साक्षात्कार भी होता है। यह देश अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं और जीवन मूल्यों के लिए सारे संसार के बीच शताब्दियों से अपनी पहचान बनाए हुए है।

मानस में भारत की इसी पारंपरिक अस्मिता वैविध्यपूर्ण परिदर्शन उपलब्ध है। यह केवल काव्य नहीं, इस महामानव समुद्र की विराट, सांस्कृतिक चेतना और संस्कारों की आदर्श परंपरा का उद्घोषक है।'' (सिंह 2002, 47)

UNESCO के संविधान की प्रस्तावना में कहा गया है–

> "Since wars beings in the
> Minds of men, it is in
> the minds of men that
> the defenses of peace
> must be constructed."

(UNESCO Constitution : debs.indstate.edv/v588755-1952. Pdj Refreined on 7.10.2013)

हमारे प्रोजेक्ट का मूल स्वर है – विश्व में प्रत्येक स्तर पर शांति, प्रेम, सद्भाव एवं सौहार्द्र की स्थापना हित उपायों समाधानों की खोज और चूँकि परिवार समाज की लघुतम ईकाई और जीवन की प्रथम पाठशाला होता है, इसीलिए हमने परिवार और परिवारिक आदर्शों/मूल्यों की बात की है। इस उद्देश्य को लेकर समाधान हेतु हमने भारतीय संस्कृति के (Classic) श्रेण्य ग्रंथ रामचरितमानस के अयोध्याकांड में चित्रित पारिवारिक आदर्शों को अपने अध्ययन का विषय बनाया है। हमारा मानना है कि यदि परिवार में प्रेम और सद्भाव होगा तो विश्व–बंधुत्व की स्थापना का पथ सहजता से प्रशस्त हो सकेगा। आज के इस भौतिकवादी युग में संयुक्त परिवार ही नहीं बल्कि एकल परिवार भी टूट रहे है। दुनिया में यह चीज बहुत पहले ही आरंभ हो गई थी और भारत में अब हो रही है।

परिवार के प्रति एक संवेदनशील वातावरण के निर्माण का हमें संकल्प लेना होगा। परिवार व्यक्ति को जिम्मेवार और सफल बनाने के साथ–साथ जुझारुपन की शिक्षा व शक्ति भी देता हैं। व्यक्ति की आत्मा के पोषण के लिए परिवार में सदैव एक अदृश्य प्रेरणा छिपी होती है जो प्रत्येक सदस्य को सफलता के शीर्ष पर पहुँचाने हेतु सोपनों की ओर चढ़ने और बढ़ते रहने को प्रोत्साहित करती है। केवल इतना ही नहीं हर कामयाब इंसान को यह अच्छी तरह पता होता है कि जिन्दगी के किसी मोड़ पर किसी कारण वश यदि गलती से वह फिसला तो परिवार उसे थाम लेगा और मंजिल तक पहुँचने की नई राह समझाएगा। संसार के इस मानव महासागर में प्रेम की बूँदे सूखती जा रही हैं। यदि इसी तरह से नफरत के बीच बोये जाते रहे तो मानवता तबाह हो जाएगी। आज पुनः भारतवर्ष पर सांस्कृतिक संकट की घटाएँ छाने को बेताब हैं। आर्थिक संकट का समाधान और निदान ढूँढ़ा जा सकता है लेकिन चारित्रिक संकट से उबरने में सदियाँ लग जाती हैं। इसीलिए आइए विधाता के अनमोल वरदान 'प्रेम' को बचाने की कोशिश करें और परिवार के प्रति एक संवेदनशील वातावरण– निर्माण हेतु दृढ़–प्रतिज्ञ हो।

उद्देश्यः

(क) **<u>सामान्य</u>** :–

- यह पता लगाना कि तुलसीदास की रचनाएँ युवा पीढ़ी के बीच आज भी लोकप्रिय हैं?
- तुलसीकृत रामचरितमानस के अध्ययनोपरांत युवा–पीढ़ी पर पड़ने वाले प्रभावों के आलोक में जाना।

(ख) **विशिष्ट** :–

- वर्तमान युवा पीढ़ी को वर्तमान भौतिकवादी युग में टूटते परिवारों और बिखरते रिश्तों की पृष्ठभूमि में नैतिक और पारिवारिक मूल्यों के प्रति जागरूक बताना।
- रामचरितमानस तथा अयोध्याकांड की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रांसगिकता के आलोक में इसके नैतिक और पारिवारिक मूल्यों के आधार विश्व–बंधुत्व का आदर्श स्थापित करना।

अध्ययन पद्धति :–

- **प्रथम पद्धति** – इसके अंतर्गत प्रश्नावली तथा साक्षात्कार प्रणाली का प्रयोग किया गया है। उस दौरान जो तथ्य उभर कर आए, उन सबका संकलन किया गया।
- **सहायक पद्धति**– इसके अंतर्गत पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ और इंटरनेट का प्रयोग किया गया है।

इस परियोजना के परिणाम का सर्वेक्षण पटना वीमेन्स कॉलेज, मगध महिला कॉलेज, वाणिज्य महाविद्यालय, बी.एन. कॉलेज, पटना कॉलेज और पटना विश्व विद्यालय के प्राध्यापकों, विद्यार्थियों, गृहणियों, संभ्रांतजनों और श्रमिक वर्ग को केंद्र में रखकर किया गया है। उत्तरदाताओं के विचार को प्रतिशत (%) रूप में प्रदर्शित कर ग्राफ द्वारा दिया गया है।

Graph-1

प्रश्न 1. क्या आज की युवा पीढ़ी रामचरित मानस से शिक्षा ग्रहण कर सकती है?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	43	05	02

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	86%	10%	04%

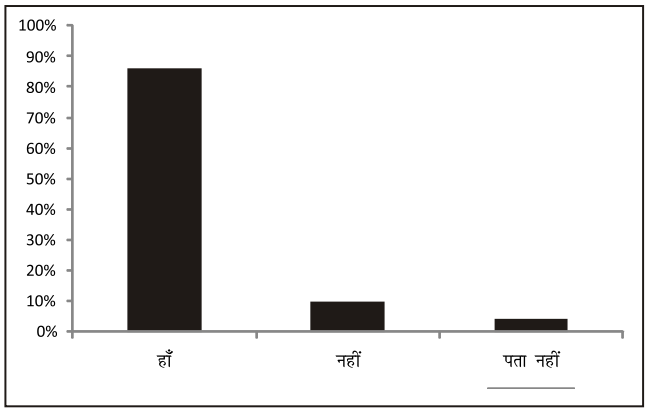

निष्कर्ष: शत् प्रतिशत् उत्तरदाताओं में से 86% लोगों ने माना कि आज की युवा पीढ़ी रामचरितमानस से शिक्षा ग्रहण कर सकती है, वहीं 10% उत्तरदाता इससे सहमत नहीं हैं और 04% को इसकी कोई जानकारी नहीं है।

Graph–2

प्रश्न 2. गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस को आप किस प्रकार का ग्रंथ मानते हैं?

कुल अंक	धार्मिक	राष्ट्रीय	पारिवारिक
50	35	05	10

कुल%	धार्मिक	राष्ट्रीय	पारिवारिक
100%	70%	10%	20%

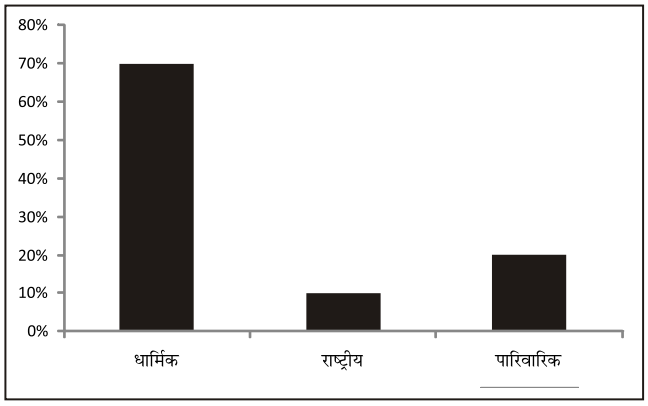

निष्कर्ष: शत् प्रतिशत् उत्तरदाताओं में से 70% ने रामचरितमानस को धार्मिक ग्रंथ माना है और 10% उत्तरदाता ने इसे राष्ट्रीय एवं 20% ने इसे पारिवारिक ग्रंथ माना है।

Graph-3

प्रश्न 3. क्या रामचरितमानस आधुनिक युग की सामाजिक स्थिति को परिवर्तित करने में सक्षम है?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	35	05	10

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	70%	10%	20%

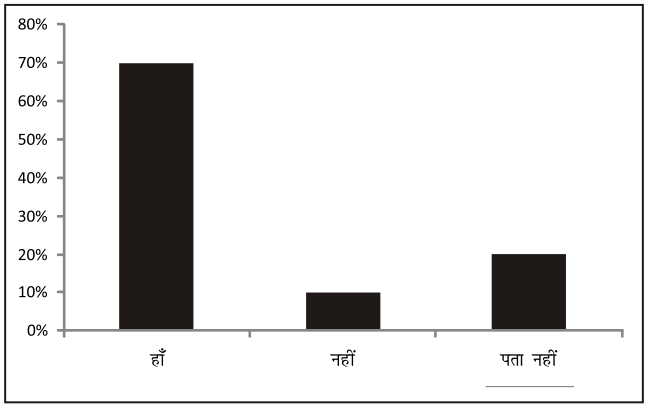

निष्कर्ष: शत् प्रतिशत् उत्तरदाताओं में से 70% ने माना है कि रामचरितमानस आधुनिक युग की सामाजिक स्थिति को परिवर्तित करने में सक्षम है। 10% उत्तरदाता इससे सहमत नहीं हैं और 20% लोगों को इसकी कोई जानकारी नहीं है।

Graph-4

प्रश्न 4. क्या रामचरितमानस आज भी प्रासंगिक है?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	30	18	02

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	60%	36%	04%

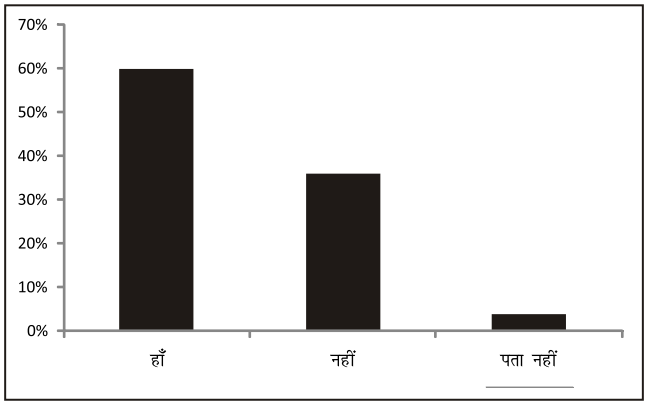

निष्कर्ष : शत् प्रतिशत् उत्तरदाताओं में से 60% ने माना कि रामचरितमानस आज भी प्रासंगिक है, वहीं 36%

उत्तरदाता इससे सहमत नहीं हैं और 04% को इसकी कोई जानकारी नहीं है।

Graph-5

प्रश्न 5. आपकी दृष्टि में रामचरितमानस का कौन-सा चरित्र सर्वाधिक आदर्शवादी है?

कुल अंक	श्रीराम	हनुमान	विभीषण
50	40	05	05

कुल%	श्रीराम	हनुमान	विभीषण
100%	80%	10%	10%

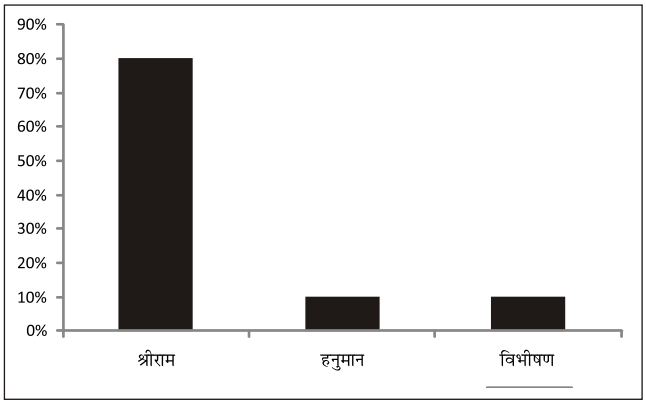

निष्कर्ष: शत् प्रतिशत् उत्तरदाताओं में से 80% ने श्रीराम को आदर्शवादी चरित्र माना, 10% लोगों ने हनुमान को और 10% लोगों ने विभीषण को माना।

Graph-6

प्रश्न 6. क्या अयोध्याकांड के पारिवारिक मूल्य आज भी हमारा मार्गदर्शन करने में सक्षम है?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	40	05	05

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	80%	10%	10%

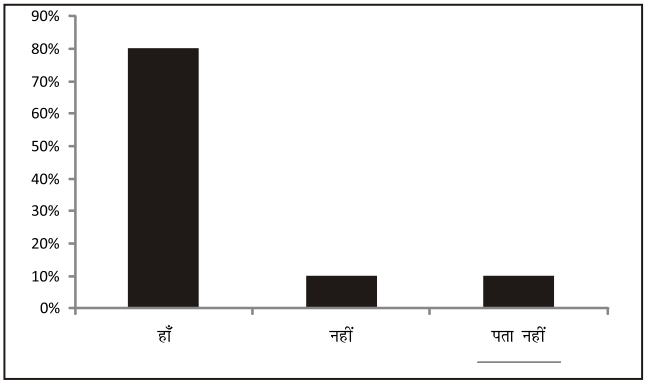

निष्कर्ष: शत् प्रतिशत् उत्तरदाताओं में से 80% ने माना कि अयोध्याकांड के पारिवारिक मूल्य आज भी हमारा मार्गदर्शन करने में सक्षम है, वहीं 10% इससे सहमत नहीं हैं और 10% को इसकी कोई जानकारी नहीं है।

Graph-7

प्रष्ठन 7. श्रीरामचरितमानस के नायक श्रीराम के व्यक्तित्व व चरित्र में पारंपरिकता और आधुनिकता का सुंदर सामंजस्य है?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	30	15	05

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	60%	30%	10%

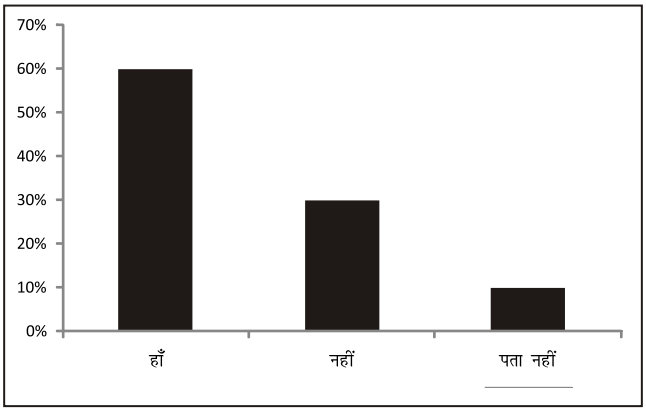

निष्कर्ष: शत् प्रतिशत् उत्तरदाताओं में से 60% ने माना कि मानस के नायक श्रीराम के व्यक्तित्व व चरित्र में पारंपरिकता और आधुनिकता का सुंदर सामंजस्य है, वहीं 30% इससे सहमत नहीं हैं और 10% को इसकी कोई जानकारी नहीं है।

Graph-8

ज्ञानार्जन के स्रोत

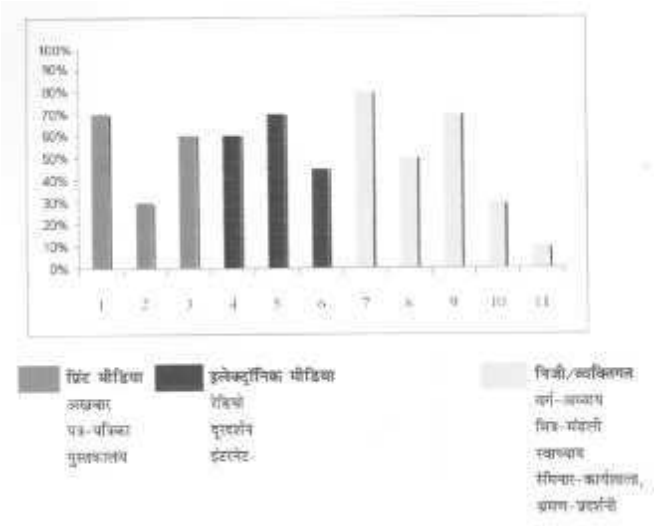

मुद्रित माध्यम, दृश्य-श्रव्य माध्यम और स्रोत के माध्यम से तुलसीदास और रामचरितमानस के बारे में निरंतर

सूचनाएँ/जानकारियाँ उपलब्ध हो रही हैं। उपर्युक्त सभी स्रोत लोकप्रिय हैं। अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकालय, रेडियो, टेलीवीजन एवं वर्ग अध्ययन के द्वारा युवा पीढ़ी तुलसी और मानस के प्रति जितनी रूचि दिखा रही है, सिनेमा और दूरदर्शन धारा-वाहिकों का निर्माण हो रहा है वह आज भी उसकी अक्षुण्ण लोकप्रियता का परिचायक है।

निष्कर्ष :

आज के इस प्रतिस्पर्द्धात्मक जीवन में नैतिक मूल्यों का क्षरण और आदर्शों का विघटन हो रहा है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति में जिन पारिवारिक मूल्यों और आदर्शों का महत्व दिया गया है, वे आज भी हमारे मार्गदर्शक है। आदर्शवाद के सन्मार्ग पर चलकर ही परिवार, समाज, देश और विश्व उन्नति के पथ पर अग्रसरित होता है। साथ ही उज्जवल चरित्र, दृढ़ प्रतिज्ञ तथा उच्च नैतिक मूल्यों से समन्वित व्यक्तित्व वाली, युवा पीढ़ी ही भविष्य को कर्णधार होती है । यह संस्कार उन्हें परिवार से मिलता है जो उनकी प्रथम पाठशाला होती है। ऐसे चरित्रवान युवा ही 'वसुधैव कुटुम्बम्' की हमारी सांस्कृतिक विरासत को वहन कर सकते है।

संदर्भ संकेत :

शुक्ल, आचार्य रामचंद्र (2012). त्रिवेणी, लोकभारती पुस्तक बिक्रेता तथा वितरक द्वारा प्रकाशित एवं वितरित 15-ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद - 1, पृ०-79, 80, 77, 78, 76

सिंह, उदयभानु (1976). तुलसी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी-17, जगतपुरी, दिल्ली- 110005, पृ०- 41, 43, 46, 47, 169, 72, 73, 117, 123, 217, 214, 215

शुक्ल, आचार्य रामचंद्र (2003). गोस्वामी तुलसीदास, वाणी प्रकाशन, 4697/95, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

राय सरिता (1993). कबीर एवं तुलसी की सामाजिक दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, वाणी, प्रकाशन, 4697/5, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, पृ०-37

सिंह, डॉ० लक्ष्मी (2002). आधुनिक संदर्भ में रामचरित मानस की प्रांसगिकता, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, प्रेमचंद मार्ग, राजेन्द्र नगर, पटना- 800003, पृ०- 21, 63, 2, 62, 47

गोस्वामी तुलसीदास- रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोविन्द भवन कार्यालय, गोरखपुर-270005 कोलकाता का संस्थान, संवत् 2067, पृ०-361, 374, 383, 482, 496, 556, 557, 639, 194, 606, 196, 399, 196, 199

तोमर डॉ० अजित नारायण सिंह (1977). तुलसी की रचनाओं का भाषा वैज्ञानिक तथा शास्त्रीयविवेचन, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, कदमकुआँ, पटना-800 003, पृ०- 273, 275

Website :

www.google.com

http://en.wikipedia.org/wiki/Ramayan